2013-14

Vol-3 Issue-2
Jan. to Apr. 2014

ISSN-2250-0383

SHODHANKAN

SHODHANKAN

Quarterly

International

Multi - Disciplinary

Referred & Reviewed

Research Journal

S.No.	Paper Name	Name	Page No.
१८	Role Of Men In Women Empowerment	Prof. Sanjay B Choudhari	७४ ते ७७
१९	१९९० नंतरच्या मराठी साहित्यातील देवदासी स्त्रीचे चित्रण (बदलते संदर्भ)	डॉ. सौ. वंदना विनायक नढे	७८ ते ८०
२०	ग्रामीण साहित्याची चळवळ	डॉ.भास्कर शेळके	८१ ते ८४
२१	राष्ट्रसंत तुकडोजींची समाज परिवर्तनाची दिशा	प्रा. कु. हर्षा येवले	८५ ते ८७
२२	आसावरी काकडे यांची कविता : एक आत्मभान	डॉ.मंदाकिनी नारायण वाघ	८८ ते ९२
२३	पत्रकारिता का महत्व	डॉ.मिर्झा असदबेग रुस्तुमबेग	९३ ते ९५
२४	Effective Use of Grammar - Translation Method in Teaching English at Tribal High Schools.	Prof. A.D.Satpute	९६ ते ९९
२५	Rainwater Harvesting	Dr. Seema S. Malankar	१०० ते१०४
२६	Safety And Health Of Agricultural Labourer In India	Mr. Bharat Trimbakrao Nirwal	१०५ ते१०८
२७	"Recent Trends in Foreign Direct Investment"	Dr. Ashok B. Navale	१०९ ते११२
२८	साष्टांग नमस्कार : छंदिष्टांचे जग	डॉ. सौ. यु. आर. शिंदे	११३ ते११७
२९	Charles Babbage's- Life History, Research And Publication	V. B. Bhalerao* S. R. Kale**	११८ ते१२१
३०	Oral Tradition And Its Influence On Our Living	Karle Jaya Ambadas	१२२ ते१२४
३१	Study The Normality of Body Mass Index of First Year Undergraduate College Girls under Pune University	Dr. 1Khaire P.B.	१२५ ते१२८
३२	Stress Management For Athletes	Dr. Sharad Magar	१२९ ते१३१
३३	Urban Rural Gap And The Dynamics Of Mass Media In Development Communication	Dr. Ms. Rekha Shelke Prof. Ms. Asha Deshpande	१३२ ते१३८

HINDI
ISSN - 2250-0383
RNI-02988/13/01/2011-TC

पत्रकारिता का महत्व

डॉ.मिर्झा असदबेग रुस्तुमबेग
सहयोगी प्राध्यापक, मिल्लिया कला,विज्ञान एवं व्यवस्थापन शास्त्र महाविद्यालय, बीड.

प्रस्तावना - अधुनिक युग मीडिया के चतुर्दिक प्रसार का युग है । नई- नई तकनीकीयो के कारण , विज्ञापनों की वृद्वि के कारण परिवर्तन स्वाभाविक है। इन्ही सब कारणों की वजह से पत्रकरिता का निरन्तर वैविध्यपूर्ण होते जाना प्रासंगिक एवं महत्वपूर्ण है। विद्विनों का मत है कि पत्रकारिता का इतिहास लगभग एक हजार वर्ष पुराना है। पत्रकरिता शब्द की न्युत्पन्ति `पल` शब्द से हुई है। जिसका अर्थ है। सूचना अथवा संदेश प्रेषित/ प्रसारित करने वाला उपकरण । प्रारंभ में भावों तथा विचारों की अभिव्यक्ति पल द्वारा प्रकट की जाती थी। ये भाव तथा विचार एक व्यक्ति सार्वजनिक अथवा निजी प्रतिष्ठान (व्यापारिक धार्मिक आदि) द्वारा राजनीतिक सूचनाए और संदेश दुसरों को प्रंषित करने हेतु ही क्यों न भेजे जायें समाचार भी संदेश या सूचना का ही पर्याय माना जाता है। इससे यह सिध्द होता है की प्ररंभीक काल में समाचार युक्त पलों को समाचार पल कहा जाता था । अंग्रजी भाषा में इन्हे न्यूज पेपर मुद्रित होने लगे या साप्ताहिक , पाक्षिक मासिक जर्नल प्रकाशित होने लगे तो हिन्दीं में समाचार - पल और जर्नल को पलिका शब्द की संज्ञा प्रदान की गयी । कालान्तर में जर्नल शब्द जर्नलिज्म के रुप में प्रचलित हो गया। इन सभी से सम्बधित लेखन कार्य को पत्रकरिता कहा गया।

परिभाषा पत्रकरिता के अभिप्राय को स्पष्ट करने हेतु उसकी परिभाषा पर विचार करना आवश्यक है। अनेक विद्वानों ने पत्रकरिता को इस प्रकार परिभाषित किया है। यथा-

१. **प्रो. एडविन एमरी-** पत्रकरिता अल्प या निश्चित कालावधि में समाचारों एंव विचारो को अभिधारक कथन और सर्जनात्मक विधाओं के माध्यम से व्यापक स्तर पर बृहत्तम सम्प्रेषण की कला है। इसके द्वारा विश्व के समग्र वाङमय सामायिक जीवन के परिवर्तन चक्र, सभ्यता, संस्कृति के विविध आयामों तथा ज्ञान-विज्ञान युक्त विचार श्रंखला को समझने एंव महसुस करने की गहरी निर्लिप्त दृष्टि एंव वैज्ञानिक तर्कप्रंज्ञा प्राप्त होती है।

२. **डब्ल्यू. बी. स्टीड** -पत्रकरिता जनसेवा है, कला है।

३. **सी. जी. मूलर-** पत्रकरिता एक व्यवसाय है जिसका सीधा सम्बन्ध सामाजिक ज्ञान है। इस व्यवसाय के अन्तर्गत , तथ्यों की प्राप्त ध्यानपूर्वक उसका मूल्यांकन तथा सम्यक प्रस्तुति अनिवार्य है।

४. **इन्द्र विदयावाचस्पति** -पत्रकरिता पांचवाँ वेद है, जिसके द्वारा ज्ञान-विज्ञान सम्बन्धी बातों को जानकर हम अपनी बुध्दि का विकास करते है।

५. **रामचन्द्र तिवारी** –"पत्रकरिता विशिष्ट देशकाल परिस्थितिगत तथ्यों का अमूर्त , परोक्ष मूल्यों के संदर्भ और आलोक उपस्थित करती है।"

६. **प्रकाशचन्द्र भुवालपुरी -** ''पत्रकार समय और समाज के संदर्भ में प्रबुध्द रहकर जौ दायित्व बोध कराता है , समाज कल्याण के लिए उसका समयोचित प्रकाशन ही पत्रकरिता है।''

पत्रकरिता का व्यावसायिक अभिप्राय है- तात्कालिक घटनाओं, बदलते चलनों लोगों तथा अलग-अलग मुददो पर ध्यानपुर्वक सूचना एकत्रित करकें उसे प्रमाणित करना, उसका विश्लेषण करना तथा उसे प्रस्तूत करना ही पत्रकरिता है। जो लोग इस पत्रकरिता को व्यवहार में लातें है उनको पत्रकार की संज्ञा प्रदान की जाती है।

पत्रकरिता के मानदण्ड

सन १९२३ ई. में अमेंरिकी समाचार -पत्र संपादक सोसायटी द्वारा पत्रकरिता के संदर्भ में कुछ मानदण्ड प्रस्तावित किये गये जो इस प्रकार है।

1- **उन्तरदायित्व -** समाचार संकलन की प्रक्रिया में जनकल्याण की भावना निहित होना आवश्यक है। जन साधारन के प्रति एक उन्तरदायी भावना का होना हि जन-जागरण के प्रति पत्रकार को प्रेरित कर सकता है। स्वार्थ सिध्दि हेतू पत्रकरिता अथवा असामाजिक पक्ष का पोषण उन्तरदायित्व विहीन पत्रकरिता है।

2- **प्रेस की स्वत्रंता -** लोक कल्याण मार्ग में जो भी अवरोध हैं उन्हें पृथक करना या पृथक करने की चेष्टा प्रेस का प्रमुख कार्य है। इसलिए आवश्यक यह है कि उस पर कोई बन्धन न हो, वह पराश्रित न हो तथा वह अत्याचार -अनाचार के खिलाफ आवाज उठाने में किसी अवरोध से बाधित नही हो। इसके अतिरिक्त प्रेस का यह दायित्व बनता है कि वह नैतिक मूल्यों की संरक्षकता के साथ ही साथ अपनी स्वतंत्रा का उपभोग सिर्फ निष्पक्ष होकर ही करे तभी वह सफल पत्रकार कहा जायेगा । किसी के पक्ष में अनावश्यक हस्तक्षेप साफसूथरी पत्रकरिता नहीं मानी जाती है। सबसे तहत्वपूर्ण तथ्य यह है की आधुनिक समय में स्वच्छ पत्रकरिता की अपेक्षा करना आकाश के तारे गिनने के समान है। आजकल की पत्रकरिता राजनीति से प्रेरित है। सत्ता के विरोध में आवाज उठाना आ बैल मूझे मार की कहावत के समान है। कहने का अर्थ यह है कि सत्ता के विरूध्द जाना मुसीबत मोल लेने के बराबर है । आधुनिक पत्रकरिता के स्वरूप को स्पष्ट करते हुए रा.र.खाडिकर ने काहा है कि - ''जान और विचार शब्दों और चित्रो के रुप में दूसरे तक पहँचाना पत्र-कला है।''[7] यदि देखा जाये तो यह मत केवल आधुनिक पत्रकारिता को ही नहीं निर्दिष्ट करता है बल्कि यह मत पत्रकारिता के सर्वकालिक स्वरुप को प्रस्तुत करता है।

3- **निर्भीकता-** पत्रकारिता को किसी दबाव,भय,चेतावनी तथा धमकी की वजह से सत्य को प्रकट करने के उत्तरदयित्व से पीछे नहीं हटनाचाहिए। सर्व विदित तथ्य यह है कि सत्य कि मदोन्मत्त, निरंकुश,भ्रष्टाचारी, द्रन्भी और उद्दण्ड तथा पूर्व लोग सहन नहीं कर पाते हैं। ये लोग पत्रकारों के उत्तरदायित्व तथा हत्या तक करवा देते हैं। परन्तु इसकी परवाह न करते हुए पत्रकरों को निर्भीक होना नितान्त आवश्यक है।

4- **ईमानदारी, सटीकता तथा सत्यता-** पलकार में इन तीनों गुणों का होना अति आवश्यक है। ये तीनों गुण ही प्रतिष्ठा को गौरव प्रदान करते हैं। सफल पत्रकार को इन तीनों पर अश्रित रहना अति आवश्यक है।

६. **प्रकाशचन्द्र भुवालपुरी** -''पत्रकार समय और समाज के संदर्भ में प्रबुध्द रहकर जो दायित्व बोध कराता है , समाज कल्याण के लिए उसका समयोचित प्रकाशन ही पत्रकरिता है।''

पत्रकरिता का व्यावसायिक अभिप्राय है- तात्कालिक घटनाओं, बदलते चलनों लोगों तथा अलग-अलग मुददो पर ध्यानपुर्वक सूचना एकत्रित करकें उसे प्रमाणित करना, उसका विश्लेषण करना तथा उसे प्रस्तूत करना ही पत्रकरिता है। जो लोग इस पत्रकरिता को व्यवहार में लातें है उनको पत्रकार की संज्ञा प्रदान की जाती है।

पत्रकरिता के मानदण्ड

सन १९२३ ई. में अमेंरिकी समाचार -पत्र संपादक सोसायटी द्वारा पत्रकरिता के संदर्भ में कुछ मानदण्ड प्रस्तावित किये गये जो इस प्रकार है।

1- **उन्तरदायित्व** - समाचार संकलन की प्रक्रिया में जनकल्याण की भावना निहित होना आवश्यक है। जन साधारन के प्रति एक उन्तरदायी भावना का होना हि जन-जागरण के प्रति पत्रकार को प्रेरित कर सकता है। स्वार्थ सिध्दि हेतू पत्रकरिता अथवा असामाजिक पक्ष का पोषण उन्तरदायित्व विहीन पत्रकरिता है।

2- **प्रेस की स्वत्रंता** - लोक कल्याण मार्ग में जो भी अवरोध हैं उन्हें पृथक करना या पृथक करने की चेष्टा प्रेस का प्रमुख कार्य है। इसलिए आवश्यक यह है कि उस पर कोई बन्धन न हो, वह पराश्रित न हो तथा वह अत्याचार -अनाचार के खिलाफ आवाज उठाने में किसी अवरोध से बाधित नही हो। इसके अतिरिक्त प्रेस का यह दायित्व बनता है कि वह नैतिक मूल्यों की संरक्षकता के साथ ही साथ अपनी स्वतंत्रा का उपभोग सिर्फ निष्पक्ष होकर ही करे तभी वह सफल पत्रकार कहा जायेगा । किसी के पक्ष में अनावश्यक हस्तक्षेप साफसूथरी पत्रकरिता नहीं मानी जाती है। सबसे तहत्वपूर्ण तथ्य यह है की आधुनिक समय में स्वच्छ पत्रकरिता की अपेक्षा करना आकाश के तारे गिनने के समान है। आजकल की पत्रकरिता राजनीति से प्रेरित है। सत्ता के विरोध में आवाज उठाना आ बैल मूझे मार की कहावत के समान है। कहने का अर्थ यह है कि सत्ता के विरूध्द जाना मुसीबत मोल लेने के बराबर है । आधुनिक पत्रकरिता के स्वरूप को स्पष्ट करते हुए रा.र.खाडिकर ने काहा है कि - ''जान और विचार शब्दों और चित्रो के रुप में दूसरे तक पहँचाना पत्र-कला है।''[7] यदि देखा जाये तो यह मत केवल आधुनिक पत्रकारिता को ही नहीं निर्दिष्ट करता है बल्कि यह मत पत्रकारिता के सर्वकालिक स्वरुप को प्रस्तुत करता है।

3- **निर्भीकता**- पत्रकारिता को किसी दबाव,भय,चेतावनी तथा धमकी की वजह से सत्य को प्रकट करने के उत्तरदयित्व से पीछे नहीं हटनाचाहिए। सर्व विदित तथ्य यह है कि सत्य कि मदोन्मत्त, निरंकुश,भ्रष्टाचारी, द्रन्भी और उद्दण्ड तथा पूर्व लोग सहन नहीं कर पाते हैं। ये लोग पत्रकारों के उत्तरदायित्व तथा हत्या तक करवा देते हैं। परन्तु इसकी परवाह न करते हुए पत्रकरों को निर्भीक होना नितान्त आवश्यक है।

4- **ईमानदारी, सटीकता तथा सत्यता**- पलकार मैं इन तीनों गुणों का होना अति आवश्यक है। ये तीनों गुण ही प्रतिष्ठा को गौरव प्रदान करते हैं। सफल पत्रकार को इन तीनों पर अश्रित रहना अति आवश्यक है।

मनुष्य ने अपने लघु रुप तथा सीमित साधनों के बल पर पत्रकारिता की नींव किसी-न-किसी नाम से डाली थी। आज वही नींव नि:सीम साधनों का परिवेश प्राप्त करके अपनी पूर्व युवावस्था को प्राप्त हो गयी है।

पत्रकारिता को निम्नलिखित श्रेणियों में विभक्त किया जा सकता है तथा-

1. चित्र पत्रकारिता
2. फोटो पत्रकारिता
3. वीडियो पत्रकारिता
4. विज्ञान पत्रकारिता
5. इण्टरनेट पत्रकारिता

उपरोक्त पत्रकारिता के रुपों के माध्यमसे ही वर्तमान समय में पत्रकारिता का कार्य संपादन हो रहा है। खास बात यह है कि इंटरनेट आज सम्पूर्ण दुनिया का एक ज्ञान मंच बन चुका है। नेटवर्क से किसी भी विषय पर जानकारी प्राप्त कि जा सकती है।

निष्कर्ष -

प्राचीन काल में पत्रकारिता अथवा पत्रव्यवहार के लिए कबूतरों की सहायता लेनी पडती थी। इसके पश्चात इस कार्य हेतु डाक विभाग में डाकियों को नियुक्त किया गया/समय ने करवट बदला और अब यह कार्य ई-मेल के द्वारा किया जा रहा है। टेलिफोन की सरल सुलभता के कारण लोगों में पत्र लेखन कि प्रक्रिया कम हो गयी परन्तु इन्टरनेट के कारण यह पुन: फलने-फूलने लगी है। आधुनिक परिपेक्ष में पत्रकारिता एक नये दौर में प्रवेश कर गयी है। आज आवश्यकता इस बात की है कि हिन्दी पत्रकारिता के परिप्रेक्ष्यों को अभिनव आयाम मिले निश्चित हि पत्रकारिता का भविष्य आज उजवल है। तथा उसे और भी विकासित किया जा सकता है।

संदर्भ

1. पत्रकारिता एवं सम्पादन कला - नेहा वर्मा, पृ.२
2. हिन्दी पत्रकारिता कल और आज-रसा मल्हात्रा, पृ.२
3. वही,पृ.२
4. वही,पृ.२
5. वही पृ.३
6. वही पृ.३
7. पत्रकारिता एवं संपादन कला-नेहा वर्मा पृ.३७